Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

भारत का राजनीतिक विशिष्ट वर्ग

मदन कुमार वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर उपाधि (पी.जी.) महाविद्यालय, पीलीभीत उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 181-183
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

सारांश– भारत के वर्तमान युग का शिक्षित एवं आधुनिक राजनीतिक विशिष्ट वर्ग राजनीतिक संर्कीणता के दौर से गुजर रहा है लेकिन जैसे–जैसे वह परिपक्व होता जायेगा तथा देश में स्थिरता जैसे–जैसे आयेगी वह राजनीतिक संर्कीणता का परित्याग कर राजनीतिक आधुनिकीकरण के मूल्यों को ग्रहण करेगा जैसे धर्म निरपेक्षता, जाति समानता आदि।

मुख्य शब्द –असमानता, विशिष्ट वर्ग, शासक–अशासक, परिचालन, सहभागिता,
मनसबदार, जमींदार आदि।

विशिष्ट वर्ग की संकल्पना राजनीतिक विज्ञान में प्लेटो व अरस्तू के समय से चली आ रही है जब प्लेटों ने कहा कि शासन व सैनिक वर्ग ही शासन के योग्य है तो विशिष्ट वर्ग की नीव पड़ गयी आगे अरस्तू ने कहा है कि असमानता प्रकृति का नियम है कुछ व्यक्ति जन्मतः शासित होने के लिए पैदा होते हैं तो कुछ जन्मतः शासन करने के लिए पैदा होते हैं जिन्हें 'विशिष्ट वर्ग' कहा जाता है 'समाज में प्रत्येक प्रकार उद्योग–धन्धे एवं क्रिया–कलापों में अपने प्रकार के विशिष्ट वर्ग पाये जाते हैं। यहां तक कि चोरों व वेश्याओं के भी अपने विशिष्ट वर्ग होते हैं सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था के कालक्रमेण परिवर्तन के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के विशिष्ट वर्गों में परिवर्तन होता रहता है जिसमें राजनीतिक विशिष्ट वर्ग विशेष महत्वपूर्ण हैं क्योंकि एक राज्य के अन्दर इसका अन्य सभी प्रकार के विशिष्ट वर्गो पर प्रभुत्व होता है।

विशिष्ट वर्ग के विभिन्न प्रतिपादकों में पैरटो, मास्का, लासवेल का नाम विशेष उल्लेखनीय है पैरटों का मानना है कि समाज में दो वर्ग 'विशिष्ट वर्ग व अविशिष्ट वर्ग' पाये जाते है। पैरटों विशिष्ट वर्ग को पुनः दो वर्गो में विभाजित करता है (अ) शासक विशिष्ट वर्ग एवं (ब) अशासक विशिष्ट वर्ग। पैरटों का मानना है शासक वर्ग अपने जिन विशिष्ट मूल्यों व गुणों के कारण विशिष्ट वर्ग की स्थिति को प्राप्त किया है कालान्तर में ये गुण महत्वहीन हो जाते हैं और समाज में जो नये गुण व मूल्यों को लेकर नया विशिष्ट वर्ग पनपता है

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वह एक दिन शासक वर्ग को सत्ता से हटाकर स्वयं सत्ता पर अधिकार कर लेता है इस प्रकार शासक वर्ग में निरंतर समय–समय पर परिचालन होता रहता है इसलिए पैरैटों इतिहास के कुलीन तन्त्रों का कब्रिस्तान कहता है, मास्का ने भी समाज को दो वर्गो में बांटा है उसका कहना है कि सभी समाजों ने कम विकसित तथा सभ्य से लेकर अधिक सभ्य और शक्तिशाली तक दो वर्ग पाये जाते हैं। एक वर्ग जो शासन करता है तथा दूसरा वर्ग जो शासित होता है। लास्वेल के अनुसार राजनीति का अध्ययन प्रभाव और प्रभावक का अध्ययन है। प्रभावक वे हैं जो जितना भी प्राप्त है उसका अधिकतम पाते हैं। अधिकतम पाने वाले विशिष्ट वर्ग हैं शेष जनता।

प्राचीन भारतीय समाज चार वर्णों में बंटा था ब्राह्म्ण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। इसमें दो प्रथम वर्ग ब्राह्मण एवं क्षत्रिय की विशिष्ट वर्ग में गणना की जा सकती है। ब्राह्मण पुरोहित का कार्य करता तो क्षत्रिय शासन का कार्य करता, वास्तव में दोनों एक–दूसरे के पूरक थे और दोनों वर्ण मिलकर प्राचीन भारतीय समाज पर शासन करते थे तथा वर्ण–व्यवस्था को बनाये रखना शासन का प्रमुख लक्ष्य था। लेकिन छठी शताब्दी ई0पू0 भारत में उभरे दो धार्मिक आन्दोलन बौद्ध एवं जैन ने वर्ण–व्यवस्था को गहरा धक्का दिया जिससे परिणामस्वरूप वर्ण व्यवस्था में लचीलापन आ गया और अब विशिष्ट वर्ग की श्रेणी में वैश्य व शूद्र भी आने लगे कालांतर में कई राजा वैश्य व शूद्र वर्ग से हुए। जिससे भारतीय समाज की विशिष्ट वर्ग को संरचना में धीरे–धीरे बदलाव आने लगा। जमींदार वर्ग ही एक नये विशिष्ट के रूप में उभरा।

भारत में मुस्लिम सत्ता स्थापित होने के पश्चात् एक नये विशिष्ट वर्ग का उदय हुआ जिसे हम मुस्लिम विशिष्ट वर्ग कह सकते हैं इस विशिष्ट वर्ग में काजी, मुल्ला, खान, मलिक, मौलवी आदि शामिल थे इसमें मौलवी की स्थिति भारतीय ब्राह्मणो के तुल्य थी मुगलकाल में विशिष्ट वर्ग की एक अन्य श्रेणी मनसबदारी प्रथा पनपी जो सैनिक व्यवस्था की एक विशिष्ट श्रेणी थी। जिसका मुख्य कार्य सरकार के लिये समय आने पर युद्ध लड़ना था। मनसबदारों की भी कई श्रेणियाँ थीं जिसका निर्धारण जात व सवार से होता था।

भारत में विदेशियों के आगमन के पश्चात् एक नये प्रकार के विशिष्ट वर्ग का उदय हुआ जो पुर्णतः विदेशी था इस विदेशी विशिष्ट वर्ग अंग्रेज पुर्तगाली डच एवं फ्राँसीसी थे। मुगल साम्राज्य के पतन से उपजी शक्ति–शून्यता को भरने में न तो मराठे सफल हुए न अफगानी, अपितु अंग्रेज सफल हुए अतः भारत में अंग्रेजों का एक विशिष्ट वर्ग के रूप में उदय हुआ जिसने भारत में शासन करना प्रारम्भ किया। जिसने भारत में शनै–शनै अंग्रेजी शिक्षा व संस्कृति का प्रचार–प्रसार शनै–शनै शुरू किया। जिससे भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त एक नये भारतीय विशिष्ट वर्ग का उदय हुआ। जिसमें राजा राममोहन राय, तिलक, गोखले, स्वामी विवेकानन्द इत्यादि थे। अंग्रेजों ने भारत में एक केन्द्रीय सत्ता को जन्म दिया जिसका आधार योग्यता तथा

जिसमें प्रवेश का साधन प्रतियोगिता व योग्यता थी। अतः अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त विशिष्ट वर्ग के माध्यम से ब्रिटिश सरकार ने भारत में शासन शुरू किया। धीरे–धीरे इन्हीं विशिष्ट बुद्धजीवी वर्ग में से स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों व राजनेताओं का जन्म हुआ जिन्होंने ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना अपना लक्ष्य बनाया। कालान्तर में इस वर्ग को सफलता मिली अर्थात् बुद्धजीवी विशिष्ट वर्ग की बदौलत भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्र हो गया।

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय राजनीति में सहभागिता का काल प्रारम्भ हुआ। संविधान द्वारा स्थापित की गयी राजनीतिक समानता ने जन साधारण को बिना किसी भेदभाव के तथा बिना किसी शिक्षा अथवा सम्पत्ति के योग्यता के राजनीतिक पदों के लिए चुनाव लड़ने ओर मत देने का अधिकार प्रदान किया। जिसका परिणाम यह हुआ भारत में शिक्षित व अशिक्षित लोगों के मिले–जुले विशिष्ट वर्ग का उदय हुआ जहां अशिक्षित राजनीतिक विशिष्ट वर्ग धर्म व जाति के मूल्यों से तथा वही शिक्षित राजनीतिक विशिष्ट आधुनिक पाश्चात्य मूल्यों स्वतन्त्रता समानता से अभिप्रेरित था। धीरे–धीरे भारत में जैसे–जैसे शिक्षा का प्रसार वैसे–वैसे अशिक्षित राजनीतिक विशिष्ट वर्ग की संख्या में कमी आयी परिणाम यह हुआ कि सन् 2000 के दशक में अशिक्षित राजनीतिक विशिष्ट वर्ग का संसद व राज्य विधानसभा से लगभग सफाया हो गया। लेकिन सबसे उल्लेखनीय बात विशिष्ट वर्ग के इस परिवर्तन के दौर में यह रही कि नया शिक्षित राजनीतिक विशिष्ट वर्ग ने धर्म व जाति जैसे परम्परागत मूल्यों से अपने को जोड़ लिया परिणाम यह हुआ कि केन्द्र स्तर पर बी.जे.पी. जैसी धार्मिक पार्टी का उदय हुआ तो राज्य स्तर सपा, बसपा, लोजपा व राजद जैसी जातिवादी दलों का उदय हुआ और कांग्रेस जैसे धर्म–निरपेक्ष दल का केन्द्र व राज्य स्तर पर पतन हो गया।

विवेचना से स्पष्ट है कि भारत के वर्तमान युग का शिक्षित एवं आधुनिक राजनीतिक विशिष्ट वर्ग राजनीतिक संर्कीणता के दौर से गुजर रहा है लेकिन जैसे–जैसे वह परिपक्व होता जायेगा तथा देश में स्थिरता जैसे–जैसे आयेगी वह राजनीतिक संर्कीणता का परित्याग कर राजनीतिक आधुनिकीकरण के मूल्यों को ग्रहण करेगा जैसे धर्म निरपेक्षता, जाति समानता आदि।

सन्दर्भ–

1. भारतीय राजनीतिक व्यवस्वथा – सईद एस.एम.
2. भारतीय राजव्यवस्था – जैन पुखराज
3. भारतीय शासन एवं राजनीति – फाडिया बी.एल.
4. अन्य पत्र–पत्रिका